किसान बर्बाद हो जायेगा । अन्न उत्पादन की भारी हानि होगी और पिछड़ा हुआ राजस्थान प्रदेश आर्थिक दृष्टि से और पिछड़ जाएगा ।

अत: कृषि मंत्री जी का इस गंभीर संकट में विशेष व्यवस्था करके किसानों की फसल बचाने की ओर ध्यान आकृष्ट करता हूं ।

(vii) Supply of adequate quantity of sugar, wheat, etc. in Madhya Pradesh for Ramzan and Raksha Bandhan festivals.

**श्री सत्य नारायण जटिया** (उज्जैन) : सभापति महोदय, खुले बाजार में शक्कर और उपभोक्ता वस्तुओं के मूल्य तेजी से बढ़ रहे हैं । रमजान और रक्षाबन्धन के त्यौहारों के लिए शक्कर उपलब्ध कराना निहायत जरूरी है । मध्य प्रदेश में कन्ट्रोल की राशन की दुकानों से गेहूं का वितरण अनियमित हो गया है । भारतीय खाद्य निगम के पास स्टाक की स्थिति दयनीय है। इसके कारण गरीब और मेहनतकश लोग परेशान हैं । खाद्य तेलों में मूंगफली का तेल 12 रुपए और सरसों का तेल 14 रुपये प्रति किलो की ऊंचाई को छू गया है । दालें और सब्जियां महंगी हो गई है ।

अतः मेरा सरकार से अनुरोध है कि रमजान और रक्षाबन्धन के त्योहारों पर अतिरिक्त शक्कर का कोटा स्वीकृत करें तथा मध्य प्रदेश की लापता 40 हजार मीट्रिक टन शक्कर का शीघ्र पता लगा कर पिछले बकाया के रूप मे उपभोक्ताओं को सस्ते भाव पर उलपलब्ध करावें तथा राशन की दुकानों पर निर्धारित मात्रा का खाद्यान्न दिया जाये जिससे बढ़ती हुई महंगाई से त्रस्त जनता को राहत मिले ।

(viii) Remunerative price for superior variety of cotton produced in Southern States.

**श्री बी० डी० सिंह** (फुलपुर) : सभापति महोदय, मैं एतद्द्वारा माननीय कृषि मंत्री का ध्यान दक्षिणांचल स्थित कपास उत्पादन करने वाले किसानों के शोषण की ओर आकर्षित करना चाहता हूं । इस क्षेत्र के किसान "सुविन" नामक एक सर्वोत्त किस्म की कपास काफी मात्रा में उत्प करते हैं, परन्तु वे क्रेता कपास मिलों क सुनियोजित षड़यंत्र का शिकार हो रहे हैं। विदित हुआ है कि इस षड़यंत्र के परिणामस्वरूप केवल आन्ध्र प्रदेश एवं तमिलनाडु में ही 'सुविन' किस्म की क्रमश: लगभग दस हजार एवं चार हजार बेल्स कपास किसानों के पास अभी तक पड़ी हुई है और उसका विक्रय नहीं हो पा रहा है। यह स्थिति जानबूझकर इसलिए पैदा की जा रही है, जिससे किसान अपने उत्पादन को कम मूल्य पर बेचने के लिए बाध्य हो जायें । वर्तमान बाजार मूल्य पर इसकी कीमत लगभग सात करोड़ रुपए हो सकती है ।

'सुविन' किस्म की कपास का जनन भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् के क्षेत्रीय केन्द्र कोयम्बटूर द्वारा किया गया था और 1972 से सफलतापूर्वक इसकी खेती की जाती रही है । यह भारत में सर्वोत्तम किस्म की कपास मानी जाती है । इसके जनन के उपलक्ष्य में भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् के कृषि वैज्ञानिकों को केन्द्रीय सरकार द्वारा पुरस्कृत भी किया गया है । इस कपास के रेशे गुणात्मक दृष्टि से सबसे अच्छे माने जाते हैं (मूल्य सम्बन्धी विवाद उत्पन्न करके कुछ स्थानीय संगठन किसानों की दशा दयनीय बना रहे हैं । यह भी आशंका व्यक्त की गई है कि चन्द स्वार्थी तत्व इस उन्नतशील जाति की कपास के बीज का संग्रह करके सामान्यत किसानों को इसके उत्पादन लाभ से वंचित करना चाहते हैं । यह भी खेद का विषय है कि भारत में अभी तक कोई अधिकृत मूल्य निर्धारण संस्था नहीं है, जो उत्पादन व्यय एवं अन्य कारकों को ध्यान में रखते